MA (Sem-II)
MPOLCC-07

POL. SCIENCE

Dr. S.B. Kr.

INTERNATIONL TERRORISM and DEMOCRATIC EXPANSION

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एवं लोकतांत्रिक विस्तार

राबर्ट ओ. कोहेन और जोजफ एस. नाई जूनियर द्वारा संपादित पुस्तक 'ट्रान्सनेशनल रिलेशन्स एण्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्स' में अंतर संबंधों में राज्येतर अभिकर्ताओं (Extra-State actors) की संख्या के बढ़ते हुए प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। अंतर संबंध में का फोकस अब राष्ट्र-राज्य से राज्येतर अभिकर्ताओं में बदल रही है। इन अभिकर्ताओं में आतंकी समूह, धार्मिक आंदोलन, रंगभेद समूह और बहुराष्ट्रीय निगम शामिल हैं। इन सभी राज्येतर अभिकर्ताओं में से केवल आतंकवादी संगठनों ने हिंसात्मक भूमिका अपनाई है और शांति तथा राष्ट्र-राज्य प्रणाली के लिए गंभीर संकट पैदा कर दिया है। बढ़ते हुए आतंकवादी क्रियाकलापों ने अब विश्व भर में अपना जाल फैला दिया है। ये क्रियाकलाप एक देश से अन्य देशों या अन्य धर्मों के लोगों के विरुद्ध संचालित किए जाते हैं। इस तरह के क्रियाकलापों में निर्दोष लोगों की हत्याएँ, मानव बम, आत्मघाती दस्तों, रासायनिक हथियारों, मारक गैसों का प्रयोग या प्रयोग करने की धमकी, एवं आतंकवादी आक्रमण इत्यादि शामिल हैं।

आतंकवाद का अर्थ (Meaning):- Terrorism शब्द लैटिन के शब्दों terrere और deterre से व्युत्पन्न है। terrere का अर्थ है tremble (थरथराना, भय से कांपना) और deterre का निहितार्थ है भयभीत होना। इस प्रकार terrorism का अर्थ है लोगों को हानि पहुँचाना ताकि वे इतने भयभीत या आतंकित हो जाए कि कांपना शुरू कर दें। यह राज्य या सरकार के विधिसम्मत प्राधिकार को दुर्बल कर प्रणालीबद्ध (systemetize) हिंसा द्वारा स्पष्ट उद्देश्य प्राप्त करने की रणनीति (strategy) है। विगत में हिंसा का सहारा तब लिया जाता था जब शासक (Rular) लोगों की तकलीफों को दूर करने में विफल होते थे या वे लोगों के अधिकारों का दमन अथवा अतिक्रमण करते थे। आतंकवाद की

Scanned with CamScanner

राजनीतिक पृष्ठभूमि होती है और हिंसा एकमात्र तरीका होता है जिसका वे सहारा लेते हैं।

कुलोम्बिस और वाल्फ के अनुसार- 'आतंकवादी संगठनों की अधिक तटस्थ, मूल्य युक्त परिभाषा में उन्हें राज्येतर अभिकर्ता कहा जा सकता है जो कुछ राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गैर परम्परागत और हिंसा की रूढ़िगत तकनीकों का प्रयोग करते हैं।' वास्तव में आतंकवाद राजनीतिक उद्देश्यों के लिए हिंसा का संगठित प्रयोग है। युद्ध के समान ही आतंकवाद में भी राजनीतिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संगठित बल का प्रयोग अंतर्निहित है। हालांकि आजकल अंत० संबंध में आतंकी गुटों को 'गैर राज्यीय अभिकर्ता' (Non-state actor) भी कहा जाता है।

अतः आतंकवाद एक अच्छी तरह से सोची, समझी रणनीति है जिसमें आतंकवादी लोगों में भय और आतंक पैदा करने के लिए हिंसा का प्रयोग करते हैं। इनका निश्चित लक्ष्य हो भी सकता है और नहीं भी। आतंकवाद का मानवीय चेहरा नहीं होता है और यह मानवतावाद से बहुत दूर है। ये अपने आतंक के कार्यों से अपने आप को यथासंभव अधिक से अधिक प्रचारित करना चाहते हैं।

सीमापार आतंकवाद (Cross-border Terrorism) :- जो आतंकवाद एक देश में उत्पन्न होता है और वहीं कार्रवाई करता है जैसे भारत में पीपुल्स वार ग्रुप, नागा उग्रवादी अथवा नेपाल में माओवादी इत्यादि। लेकिन यू० के० में आइरिश रिपब्लिकन आर्मी, फिलिस्तीन में हमास (HAMAS), अलकायदा, तालिबान उन आतंकी संगठनों से भिन्न हैं जिनकी जड़ एक देश में है और ये अपनी उत्पत्ति के देश की सहायता से कार्रवाई करता है परंतु यह दूसरे देश में आतंक पैदा करने के लिए हिंसा का प्रयोग करता है। इस दूसरे किस्म के आतंकवाद को सीमा पार आतंकवाद के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसके सक्रिय कार्यकर्ताओं को उनके अपने देश से भिन्न दूसरे देश द्वारा प्रायोजित (Sponsored) और प्रशिक्षित किया जाता है। भारत की सीमा के बाहर पाकिस्तान तथा पाक-अधिकृत कश्मीर में बड़ी संख्या में आतंकी प्रशिक्षण शिविर हैं जहाँ से पाकिस्तान द्वारा प्रशिक्षित आतंकियों को भारत भेजा जाता है और वे

Scanned with CamScanner

हिंसात्मक घटनाओं को अंजाम देते हैं। सीमा पार आतंकवाद के कारण भारत में हजारों निर्दोष लोग मारे जा चुके हैं। इसी प्रकार इजरायल के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाईयाँ उसकी सीमा के पार से की जाती है।

अंत० आतंकवाद (Int. Terrorism):- सीमापार आतंकवाद और अंत० आतंकवाद में केवल तकनीकी अंतर है। सीमा पार आतंकवाद में आतंकवादियों को केवल दूसरे देश में कार्रवाई करने के लिए एक देश में प्रशिक्षित किया जाता है जबकि अंत० आतंकवाद के शिकार कई देशों में होते हैं। जैसे 'अलकायदा' अपने शिकार के लिए किसी एक देश या क्षेत्र में सीमित नहीं है। इसके शत्रु अनेक देशों में हैं। अलकायदा इस्लामी सिद्धांत की प्रधानता चाहता है और जो भी इसके मार्ग में आते हैं, वे सभी इसके निशाने पर हैं। इसलिए आज U.S.A., U.K, फ्रांस, भारत श्रीलंका सहित अनेक देश अंत० आतंकवाद के शिकार हैं। दो या दो से अधिक देशों में सक्रिय सभी आतंकवाद को मोटे तौर पर अंत० आतंकवाद कहा जा सकता है।

आतंकवादी समूहों के उद्देश्य ~~एवं विधियाँ~~

आतंकवाद शक्तिशाली के विरुद्ध शक्तिहीन की रणनीति है। इसलिए कभी-कभी राजनीतिक या सामाजिक अल्पसंख्यक आतंकवाद अपनाते हैं। साधारणतया आतंकवादियों को ऐसे समूहों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो संबंधित सरकार के विरोध में अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धमकियों व हिंसा का सहारा लेते हैं।

अधिकांश आतंकवादी समूहों का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता और राज्यत्व (nationhood) होता है फिर भी 1995 में लगभग 20 प्रतिशत ~~आतंकवादी~~ अंत० आतंकवादी घटनाओं के लिए धार्मिक कट्टरता उत्तरदायी था। आतंकवादी समूहों के उद्देश्य कई प्रकार के होते हैं। भारत में बोडो विद्रोही भारत संघ के अंदर 'बोडोलैण्ड' की मांग कर रहे हैं। श्रीलंका में LTTE तमिलों के लिए स्वतंत्रता तथा पृथक राज्य की मांग कर रहे हैं। स्पेन में बास्केस तथा रूस में चेचन विद्रोही प्रभुत्व संपन्न राज्य की मांग कर रहे हैं। 80 के दशक में भारत में 'खालिस्तान' की मांग सिक्ख धर्म के

Scanned with CamScanner

आधार पर सिखों के लिए एक अलग स्वतंत्र देश खालिस्तान बनाना था। फिलिस्तीनी आतंकी संगठन 'हमास' (HAMAS) ने धर्म के नाम पर इजरायल को अस्थिर करने का प्रयास किया। औद्योगिक देशों में आतंकवाद अक्सर वहाँ देखा जाता है जहाँ आय में विसंगतियाँ बहुत अधिक होती हैं और जहाँ अल्पसंख्यक यह महसूस करते हैं कि उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता और अधिकारों से वंचित किया गया है। घृणित और प्रतिशोधी आतंकवाद के रूप में ओसामा-बिन-लादेन का अलकायदा संगठन चर्चित है। यह संगठन मूलतः अफगानिस्तान में पाकिस्तान परस्त तालिबान कट्टरपंथियों की सहायता के लिए तैयार किया गया था लेकिन उसने अमेरिका और उसके मित्रों के विरुद्ध आग उगलना शुरू कर दिया।

आतंकवाद की कार्यप्रणाली :-[Methods]

20वीं शताब्दी में आतंकवाद की तकनीकों और उसकी कार्यप्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। प्रौद्योगिकी (Technology) की उन्नति ने आतंकी संगठनों को गतिशीलता और मारक क्षमता प्रदान की। विश्व के ज्यादातर आतंकी संगठनों के पास वही उन्नत हथियार मौजूद हैं जो सामान्यतया उस देश की सेनाओं के पास होती हैं और हथियारों को चलाने में वे उतने ही प्रशिक्षित होते हैं। आतंकी संगठनों के पास ए.के.47, मोर्टार, रॉकेट लांचर आर.डी.एक्स. जैसे खतरनाक विस्फोटक मौजूद हैं और वे इसका प्रयोग धड़ल्ले से करते हैं। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित प्रविधियों का वे इस्तेमाल करते हैं:

1.) विमान अपहरण करना (Hijacking)
2.) बन्धक बनाना (Hostage-taking
3.) अपहरण करना (kidnapping)
4) छिपकर हत्या करना (Assassination)
5.) आक्रमण (Facility-attack)- दूतावास अथवा व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर आक्रमण
6.) आत्मघाती दस्ता (Self destroyer attack)
7.) मानव बम (Human bomb)- किसी प्रमुख व्यक्ति को मारने के लिए अपने शरीर में बम बांधकर विस्फोट कर देना।

संयुक्त राष्ट्र और आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष :-

Scanned with CamScanner

देश में भी लोकतंत्र की आग सुलग रही है और हांगकांग में विरोध प्रदर्शन इसका सूचक है। ~~Democratic expansion~~

5.

11 सितम्बर 2001 ~~को अमेरिका (USA) के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर को~~ ओसामा-बिन लादेन के नेतृत्व वाली अलकायदा संगठन ने अमेरिकी विमानों का अपहरण कर अमेरिकी ~~की~~ संप्रभुता का प्रतीक वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर ~~को~~ ~~एवं उसके अभेद्य किले, रक्षा मंत्रालय, 'पेंटागन'~~ को विमान टकराकर ~~ध्वस्त~~ ध्वस्त कर दिया तथा अमेरिका का अभेद्य किला [रक्षा मंत्रालय, पेंटागन] पर भी प्रहार कर दिया। अलकायदा की इस साजिश ने अंतर्राष्ट्रीय जगत को सकते में डाल दिया। ~~इस~~ अलकायदा की इस कार्रवाई ने संयुक्त राष्ट्र का भी ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इस हमले के बाद सुरक्षा परिषद ने संकल्प संख्या 1373 को स्वीकृत किया जिसमें अंत० समुदाय से राजनीतिक, कूटनीतिक, वित्तीय और अन्य उपायों से सहयोग द्वारा इस महाविपत्ति से लड़ने का आह्वान किया गया। इसी बीच संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मानव जाति को संगठित होने और इस अभिशाप से लड़ने के लिए 12 अभिसमय (Conventions) पारित किए गए। आतंकवाद के विरुद्ध अक्टूबर 2001 में अमेरिका द्वारा संचालित गठबंधन द्वारा जो कार्रवाई शुरु की गई थी, वह संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए प्राधिकार के अनुसार था।

लोकतांत्रिक विस्तार (Democratic expansion)→

लोकतांत्रिक विस्तार का आशय दुनिया भर में लोकतंत्रीय भावना के प्रचार-प्रसार से है। आज भी विश्व में अनेक ऐसे देश हैं जहाँ लोकतंत्रीय शासन-प्रणाली अथवा लोकतंत्रीय व्यवहार के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं है। चीन की साम्यवादी सरकार, उत्तर कोरिया का तानाशाह, किम जोंग, पाकिस्तान में बार-बार में सेना के द्वारा शासन को अपने हाथ में लेना इत्यादि कुछ ऐसे देश हैं जहाँ लोकतंत्र की बात करने पर उनको सजा भुगतनी पड़ती है। इसके विपरित कुछ ऐसे देश भी हैं जहाँ लोकतंत्र का छद्म रूप देखने को मिलता है। जनता सरकार के चयन में भाग तो लेती है लेकिन उन्हें सीमित मात्रा में लोकतंत्रीय अधिकार मिले होते हैं। हालांकि दुनिया में जहाँ कहीं भी लोकतंत्र है वहाँ भी अनेक समस्याएँ हैं लेकिन उन समस्याओं के समाधान के प्रति शासन-सत्ता कम व ज्यादा प्रयासरत रहती है। सूचना एवं संचार तकनीक के विकास ने विश्व में लोकतंत्र के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। 2011 में 'जस्मिन क्रांति' के नाम पर मिस्र, लीबिया इत्यादि देशों में वहाँ की जनता ने वर्षों से शासन-सत्ता पर काबिज तानाशाहों को गद्दी से उतार दिया। यह दुनिया में लोकतंत्र के प्रति ~~दुनिया~~ बढ़ते आस्था का ही परिणाम था। चीन जैसे

Scanned with CamScanner